E- ISSN No: 2395-0269

International Journal of Applied and Universal Research
Volume 2, Issue 1, Jan-Feb. 2015 Available online at: www.ijaur.com

Journal OF APPLIED AND UNIVERSAL RESEARCH

"समकालीन कथा साहित्य में पारिवारिक समस्याएँ"

डॉ. ललिता रानी
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

सारांश – समकालीन कथा साहित्य में संयुक्त परिवार में आर्थिक रूप से कमजोर या बेकार व्यक्ति व उसका परिवार भी पूरा संरक्षण पाते थे। परन्तु टूटते हुए परिवारों के साथ दूसरों का दुःख बांटने की भावना भी समाप्त होती जा रही है। महिला कथाकारों ने सक्रिय होकर नारी विकास की दृष्टि से अपने उत्तरदायित्व एवं ग्रामीण महिलाएँ श्रृंगार की देवी मात्र बनकर रूमानी आदर्श की संरक्षिका मात्र नहीं रह गयी है। महिला कथाकारों की कहानियों में नारी चेतना की अगुआयी मात्र महिलाएँ कर रही हैं।

मुख्य शब्द – समकालीन कथा, पारिवारिक समस्याएँ एवं नारी चेतना।

1. प्रस्तावना –

समकालीन कथा साहित्य में संयुक्त परिवार, एकल परिवार के बीच विघटन की समस्या उपस्थित है। ये ''एखाने आकाश नाई'' में लेखा की जिठानी संयुक्त परिवार में रहने के कारण हमेशा अपने को कोसती रहती हैं। उनके व्यवहार से परिवार के सभी सदस्य दुःखी है। लेखा से उसकी सास कहती हैं – 'बहू, बड़ी के लक्खन तो तुम देख ही रही हो। उठते–बैठते कोसती है। उसे तो घर के हम सब जहर लगे हैं। हमें तो भई उससे अब कोई उम्मीद नहीं रही। हम तो हार गए।'1 देवर देवरानी का बाहर रहना, उनकी एक तरफ तो आकर्षित करता है हौर दूसरी तरफ उनके लिए भाभी के मन में कड़वाहट भी भर जाता है। बात–बात पर लेखा को व्यंग में दिया गया उत्तर उनकी इसी भावना को स्पष्ट करता है – 'कलकत्ता के सैर–सपाटे छोड़कर कौन इस घनचक्कर में फंसेगा? यह तो हमारे ही खोटे भाग हैं, जो रात–दिन कोल्हू के बैल की तरह पिले रहते हैं।''2 लेखा का रसोईघर में मदद कराने के लिए जाने पर भाभी कहती है– रहने दो बाबा। दो दिन आराम करके आदत नहीं बिगाड़नी है। तुम बाहर हवा में बैठी, तुम्हें तो आदत भी नहीं होगी।''3 लेखा का भाभी से सैर के लिए चलने का आग्रह और भाभी का तीखा जवाब उनकी कटुता को स्पष्ट करता है– 'तुम्हीं करो नाव के सैर–सपाटे। हमारी किस्मत में तो रसोई के ही सैर–सपटे लिखे हैं।''4 नगद की लड़की के ब्याह में जाने वाला भात भाभी से सहन नहीं हो रहा। उन्हें यह अपने साथ अन्याय लग रहा है क्योंकि उनके पति का आर्थिक सहयोग भी सम्मिलित है, 'बड़ी भाभी कई बार रो चुकी हैं। भाभी ने अपना दिनभर का गुस्सा अकारण ही दोनों बच्चों पर निकाल डाला, और वे इतने रोए, इतने रोए कि हमेशा चुप रहने वाले पिताजी को भी डांटना पड़ा। और फिर भीभी रोयी, उन्होंने अपनी किस्मत को कोसा, अपने बच्चों को कोसा।''5

मालती जोशी की कहानियों में पारिवारिक विघटन का बड़ा ही मार्मिक चित्रण मिलता है। मध्य वर्गीय परिवारों की समस्याएँ और उनसे उत्पन्न टूटन और बिखराव का बहुत स्वाभाविक वर्णन 'एक घर सपनों का' कहानी में मिलता है। पति की शराब पीने की आदत के कारण अम्मा जी कभी अपनी गृहस्थी न बसा पाई। अधिकतर समय भाई–भाभियों के पास ही कटा। जब वह वहां से अपमानित होतीं तो पति के घर चली जाती, लेकिन वहां पर भी ज्यादा दिन टिकना सम्भव नहीं हो पाता। मायके लौटने पर भाभियां मजाक उड़ातीं, ताने देतीं, पति से तिरस्कृत नारी की हर जगह दुर्गति होती है चाहे ससुराल में हो, चाहे पीहर में। वह तो बिना पेंदे की लुटिया होती है, जिधर चाहा, लुढ़का दिया। बिना पैसे की नौकरानी होती है– जब चाहा, जैसा चाहा काम लिया और बस छुट्टी।'6 बेटों और बहुओं के घर भी मान–आदर बहुत है, लेकिन जिस प्रेम के लिए वे तड़पती हैं, वह वहाँ भी नहीं मिलता। मिलता है तो अपनी बेटी के पड़ोस में रहने वाले परिवार से।

'मुट्ठी भर खुशयाँ' कहानी की दीदी भी इसी तरह आदर और सम्मान तो पाती हैं परन्तु वह स्नेह नहीं जिसकी उन्हें जरूरत है। पिता की मृत्यु के बाद अपने भाई–बहनों के लिए अपने सुख की परवाह न करने वाली दीदी को अपना घर कह सकने लायक कोई जगह नहीं दिखती।

2. विश्लेषण

'बेड़ियाँ' कहानी में माँ–बेटे के बीच का रिश्ता जितना दुःखदायी है, उतना ही देवरानी–जिठानी, चचेरे भाई–बहनों और चाची–भतीजी का भी। एकमात्र बेटे की मौत के लिए अपनी बेटी को उत्तरदायी मानने वाली माँ उसे चौबीस घण्टे ताने देती है। स्वभाव की सारी कटुता बेटी के ऊपर उड़ेलती रहती है। जब बेटी से ऐसा व्यवहार है तो देवरानी के साथ कैसा होगा, उसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। चाचा के घर जाने पर रजनी और माँ का स्वागत टैक्स उगाहने वालों के रूप में होता है। जो भाई–बहन पहले रजनी के आने से खुश होते थे, उन्हें भी अब रजनी और माँ डाकू लगने लगी हैं जो उनके घर पैसा लेने आती है। देवरानी–जिठानी का सम्बन्ध कैसा है, इस उदाहरण से समझा जा सकता है– 'इसके बाद युद्ध का बिगुल बजना लाजिमी था। दोनों देवरानी–जेठानी अपने अस्त्र–शस्त्र मांजकर मैदान में उतर आयीं। मुश्किल से आठ–दस दिन ही शान्ति से कट पाते थे कि एक दिन चिनगारी पड़ जाती।

E- ISSN No: 2395-0269

International Journal of Applied and Universal Research
Volume 2, Issue 1, Jan-Feb. 2015 Available online at: www.ijaur.com

Journal OF APPLIED AND UNIVERSAL RESEARCH

जमकर लड़ाई होती और लड़ाई के तुरन्त बाद अम्मा अपना बोरिया–बिस्तर बांधना शुरू कर देती है।'7

शशि प्रभा शास्त्री की कहानियों में पारिवारिक विघटन का नया रूप देखने को मिलता है। 'नया संसार' कहानी में भाइयों ने अपने छोटे भाई को एक धार्मिक व्यक्ति के रूप में समाज में मान्यता दिला दी है। यद्यपि घर में सभी उसका आदर करते हैं परन्तु स्वार्थवश, क्योंकि संसारत्यागी के रूप में वह बढ़ावे में चढ़ाने वाली वस्तुओं का उपयोग नहीं कर सकता। उसकी भौतिक जरूरतों की तरफ घर में किसी का ध्यान नहीं जाता। जब वह इन सबसे अपना पीछा छुड़ाना चाहता है तो वही भाई–भाभी उसके शत्रु बन जाते हैं।

'अतिरिक्त' कहानी के अवांछित छुटंकू अपनी हरकतों के कारण मार तो खाते ही हैं, अपनी भाभी के द्वारा माँ को भी अपमानित करवाते हैं– 'अब तुम रोकर चिलत्तर तो दिखाओ मत अम्मा। बाबूजी को ऐसी न जाने क्या पड़ी थी कि पांच जवान बेटे होते हवाते एक और पैदा करके डाल दिया। अपने आप चले गए स्वर्ग को और हम सबको नरक में धकेल गए।''8 इसी घर में बड़े भइया के बेटे सोमदेव को देवता के बराबर दर्जा प्राप्त है और उनके चाचा छुटकू अपने भतीजे की भी मार खाते हैं क्योंकि वह अनचाहे हैं।

''माँ नहीं हूँ'' कहानी में रानी के पति और पति के भाइयों में जायदाद को लेकर झगड़ा चलता है और मुकद्दमा दायर हो जाता है। इसी दुःख से पति की मृत्यु हो जाती है। तेरहवीं के रोज जिठानी सबके बीच बैठी कहती है– 'अरे अभी क्याहुआ है। झोली लेके बच्चे भीख मांगते डोलेंगे।''9 आर्थिक स्वार्थ भाई–भाई में तथा परिवार में सम्बन्धों के ह्रास का प्रमुख कारण बनता जा रहा है। क्या पहले परिवारों का रूप ऐसा ही होता था? ताई–चाचियां अनाथ भतीजों के भीख मांगने की प्रार्थना करती थी? परन्तु स्वार्थ सब कुछ करवा सकता है।

दीप्ति खण्डेलवाल की कहानी ''एक और कब्र'' में पीढ़ियों का अन्तर स्पष्ट रूप से लक्षित होता है इसके साथ ही नई पीढ़ी की उदण्डता और पुरानी पीढ़ी के प्रति अवज्ञा का भाव भी दिखलाई देता है, न बेटों को उनकी परवाह है और न बहू को। गुप्ता जी एक स्वेटर के लिए तरसते रहते हैं लेकिन समस्या है कौन बुने। पत्नी कृष्णा बूढ़ी हो गयी, अतः बुन नहीं सकती और बहू कान्ता नौकरी करती है वो क्यों बुनेगी? छोटा बेटा अवनी माँ से कहता है– ''पैदा करना आपकी जिम्मेदारी थी, पैदा होना हमारी जिम्मेदारी थी क्या?''10 बड़ा बेटा माँ से कहता है– 'कमला तकलीफ में है तो हम ही कौन आराम में हैं, अब अगर ऐसे रुपये लुटाए जाएं तो हो लिया।''11 कमला उसकी बहन है उसके पति को दुर्घटना में बहुत चोट आयी है। उसके इलाज के लिए उसे रुपयों की बहुत जरूरत है। परन्तु भाई–बहन की व्यथा और विवशता नहीं अनुभव करता, क्योंकि इससे उसकी सुविधाओं में कमी आती है।

''एक और कब्र'' कहानी में पुरानी पीढ़ी उपेक्षित है जबकि ''एक और सीता'' की बहू मधु अपने पति और अपनी सास द्वारा इसलिए अपमानित होती है क्योंकि सास उससे छोटे–छोटे सुख भी छीन लेना चाहती है। विरोध करने पर चीखती है, रोती है जो उनका बेटा सहन नहीं कर पाता और मधु को ही घर छोड़ने को बाध्य होना पड़ता है।

''निर्बन्ध''कहानी की नानी और अनीता में बातें तो खूब होती हैं लेकिन पीढ़ियों का अन्तर उनकी बातों में स्पष्ट परिलक्षित होता है। अनीता बात–बात में कहती है – ''हाँ, तो ग्रेनी, सुनाओ कोई किस्सा अपने बैलगाड़ी के जमाने वाला।''12 ''अनीता को अधिकतर नानी एक ''फुलिश'' के अतिरिक्त कुछ नहीं लगती।''13 पीढ़ियों के विचारों का अन्तर इस कहानी में बड़ी ही स्वाभाविकता से देखने को मिलता है। नानी, नाना के दूसरी औरतों से सम्बन्ध स्वीकार कर लेती है क्योंकि सोचती हैं रहेंगे तो उनके ही। ममी, पापा के दूसरी औरतों से सम्बन्ध स्वीकार न कर पाने के कारणा तलाक ले लेती है और अनीता को ये दोनों बातें ही बेकार लगती हैं। वो अपने दोस्त संजय को बहुत चाहती है लेकिन अगर दोनों साथी बदल भी लें तो इसमें हर्ज नहीं समझती। नारी को उसका इस तरह घूमना अच्छा नहीं लगता लेकिन मम्मी उसे कुछ नहीं कहतीं क्योंकि वे समझती हैं कि अनीता अब अपना अच्छा–बुरा समझती है। अनीता कहती है – ''नानी तुमको या ममी तुमको, तुम दोनों को ही क्या मिला है अपने ढंगों से, जो मुझे अपने ढंग से जीने से रोकती हो...।''

मेहरुन्निसा परवेज की ''अयोध्या से वापसी''नामक कहानी में पति द्वारा उपक्षित तथा सामंजस्य स्थापित कर सकने में असमर्थ नीरा अपने मायके आ जाती है। पिता को छोड़कर कोई भी उसे घर में देखना भी नहीं चाहता। इस कहानी में पिता का बिल्कुल दूसरा रूप देखने को मिलता है। वह पूरी तरह पुत्री के साथ है। संयुक्त परिवार में उपेक्षिता पुत्री को स्थान नहीं मिलता, अतः वह दुबारा पति–गृह जाने के लिए विवश हो जाती है। जब दुबारा वह पति–गृह से निकलने के लिए विवश होती है तो मायके न जाकर दूसरा आश्रय ढूंढ़ती है। अपनी बेटी या बहन के दुःख में शामिल न होना उसे शरण न देना आज के विघटित होते हुए परिवारों का भयानक रूप है।

''बूंद का हक'' कहानी में भी अभिव्यक्त समस्या यही है। पति द्वारा अपमानित बेटी को पिता के अतिरिक्त कोई अपनाना नहीं चाहता। पिता बेटी का कष्ट समझता है परन्तु ममता के लिए प्रसिद्ध माँ जब उसे घर में सहन नहीं कर पाती है तो भाई–भाभी की तो बात ही व्यर्थ है, 'माँ ने उससे बोलना छोड़ दिया था, जैसे उनके पास बोलने के लिए कुछ नहीं था और था तो बस कटु जहर बुझे शब्दों के अलावा एक शब्द नहीं। भैया के लिए वह एक समस्या बन गई थी।''14 उसके कारण पिता का अपमान होता है। अतः वह वापस लौट जाने का निश्चय करती है।

''जमाना बदल गया है'' कहानी में मेहरुन्निसा परवेज से पुराने जमाने के शान–शौकत वाले जमींदार घरानों का बड़ा स्वाभाविक चित्रण किया है। घर में चहल–पहल होती थी। बड़ों का आदर होता था। धीरे–धीरे यह सब समाप्त हो गया। बच्चों से रौनक घर, बच्चों की सूरत देखने को तरसने लगा। दादा–दादी ने अपने पोतों की शक्ल ही नहीं देखी है क्योंकि बेटे–बहू एक बार भी उन्हें लेकर घर नहीं आए और दादा–दादी दिल्ली उन्हें देखने जा नहीं सके। बहू–बेटा बुढ़ापे का सहारा बनने के बजाय

E- ISSN No: 2395-0269

International Journal of Applied and Universal Research
Volume 2, Issue 1, Jan-Feb. 2015 Available online at: www.ijaur.com

सास–ससुर से ही कुछ मिलने की उम्मीद करते हैं। बेटियाँ माँ–बाप की ममता को समझती हैं लेकिन पारिवारिक विवशताओं से उनका आना सम्भव नहीं है। घर के तीनों नौकर ही, जो बाबूजी का साथ छोड़कर कहीं नहीं जाते उन्हें अपने असली बच्चे लगते हैं।

3. **निष्कर्ष**

निष्कर्षतः यह कहना समीचीन होगा कि महिला कथाकारों ने महिला समाज की समस्याओं को समग्र रूप से अपने कथा–साहित्य सृजन के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं वरन् विश्वमंच पर नारी समस्याओं को उठाया है। समकालीन परिवेश में विशिष्ट नारी लेखन के कारण हिन्दी की विवेच्य लेखिकाएँ अत्यधिक सम्मान अर्जित कर रही हैं। हिन्दी जगत की सर्वमान्य कथाकार महिलाएँ महिला विमर्शकार भी हैं यही कारण है कि समकालीन महिला कथाकारों का कथा साहित्य उनके निजी अनुभव की ग्रंथिका के रूप में स्लाघनीय है।

संदर्भ –

1. मेरी प्रिय कहानियाँ, पृष्ठ 70, मन्नू भण्डारी.
2. वही, पृष्ठ 67.
3. वही, पृष्ठ 69.
4. वही, पृष्ठ 76.
5. मेरी प्रिय कहानियाँ, पृष्ठ 80, मन्नू भण्डारी.
6. एक घर सपनों का, पृष्ठ 28, मालती जोशी.
7. मेरी प्रिय कहानियाँ, पृष्ठ 89, मन्नू भण्डारी.
8. दो कहानियों के बीच, पृष्ठ 80, शशि प्रभा शास्त्री.
9. वही, पृष्ठ 107.
10. धूप के अहसास, पृष्ठ 55, दीप्ति खण्डेलवाल.
11. वही, पृष्ठ 60.
12. वही, पृष्ठ 94.
13. वही, पृष्ठ 100.
14. अन्तिम चढ़ाई, पृष्ठ 38, मेहरून्निसा परवेज.